

श्री रामलगा स्वामी

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)

5 अक्टूबर, 2023 को भारत में श्री रामलगा स्वामी, जिन्हें वल्लालर के नाम से भी जाना जाता है, की 200वीं जयंती मनाई गई।



श्री रामलगा स्वामी के प्रमुख योगदान:

परिचय:

- श्री रामलगा स्वामी 19वीं सदी के एक प्रमुख तमिल कवि और "जज्ञान सदिधार" वंश के सदस्य थे।
 - उनका जन्म तमलिनाडु के मरुधुर गाँव में हुआ था।

सामाजिक सुधार का दृष्टिकोण:

- वल्लालर का दृष्टिकोण धार्मिक, जाति और पंथ की बाधाओं से परे है, उनका मानना है कि ब्रह्मांड के प्रत्येक अंश में दैवियता है।
 - वल्लालर जाति व्यवस्था के सख्त खिलाफ थे और उन्होंने वर्ष 1865 में 'समरसा वेद सन्मार्ग संगम' की शुरुआत की, जिसे बाद में 'समरसा शुद्ध सन्मार्ग सत्य संगम' नाम दिया गया।
 - उन्होंने वर्ष 1867 में तमलिनाडु के वडालुर में मुफ्त भोजन सुविधा 'द सत्य धर्म सलाई' की स्थापना की, जो बनिा जातिभेद के सभी लोगों को सेवा प्रदान करती थी।
 - जनवरी 1872 में वल्लालर ने वडालुर में 'सत्य ज्ञान सभा' (हॉल ऑफ ट्रू नॉलेज) की स्थापना की।

दार्शनिक मान्यताएँ और शिक्षाएँ:

- "जीवति प्राणियों की सेवा ही मुक्ति/मोक्ष का मार्ग है" वल्लालर की प्राथमिक शिक्षाओं में से एक थी।
- शुद्ध सन्मार्ग के अनुसार, मानव जीवन का प्रमुख पहलू धर्मदान और दैवीय अभ्यास पर आधारित प्रेम होना चाहिये, जिससे वशुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होगी।
- वल्लालर का मानना था कि मनुष्य के पास जो बुद्धि है, वह भ्रामक (माया) बुद्धि है तथा सटीक अथवा अंतमि नहीं है।
 - उन्होंने अंतमि बुद्धिमत्ता के मार्ग के रूप में 'जीव करुणयम' (जीवति प्राणियों के प्रतिकरुणा) पर जोर दिया।
- उन्होंने भोजन के लिये जानवरों को न मारने का आह्वान किया और गरीबों को खाना खलाना सर्वोच्च धर्म बताया।
- उनका यह भी मानना था कि अनुग्रह के रूप में ईश्वर दया और ज्ञान का अवतार है तथा दया ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग है।

